आम चुनाव

(धर्मपाल आर्य, २ एफ, कमला नगर, दिल्ली-७)

देश आम चुनावों के दौर से गुजर रहा है। हर राजनैतिक दल अपनी-अपनी नीति-रणपीति तय करने में लगा हुआ है। हार की स्थिति में और जीत की स्थिति में अपनी-अपनी भूमिका की समीक्षा करने में लगे हुए हैं, सारे दल तथाकथित धर्मनिरपेक्षता का नकाब ओढ़कर एक व्यक्ति को निशाना बनाने के ओछे से ओछे हथकण्डे अपना रहे हैं। सत्ता विरोधी लहर 1977 में भी थी लेकिन राजनीतिक शालीनता शेष मौजूद थी। सत्ता विरोधी लहर 1989 में भी थी लेकिन राजनीतिक शालीतना थी। सत्ता विरोधी पी.वी. नरसिम्हा राव के समय में भी थी परन्तु राजनीति शालीनता तब भी कायम थी। सत्ता विरोधी वातावरण तो अभी भी बना हुआ है किन्तु इस वातावरण में राजनीतिक शालीना बिल्कुल समाप्त हो गयी है। यह देश एक जाति विशेष, एक वंश विशेष, एक खानदान विशेष तथा एक परिवार विशेष की बापौती नहीं है। अपितु यह देश उन सबका है जो इसमें रहते हैं यह देश उन सबका है, जो देश के सामने आने वाली चुनौतियों को अपनी चुनौती समझते हैं। यह देश उन सबका है, जो देश की समस्याओं को अपनी समस्या समझते हैं। यह देश उन सबका है जो इस देश की पीड़ा को अपनी पीड़ा समझते हैं। यह देश उन सबका है जो इसके उत्थान को अपना उत्थान समझते हैं। यह देश उन सबका है जो इसके सुख-दुःख को अपना सुख-दुःख, उसके हानि-लाभ को अपना हानि-लाभ तथा इसकी जीत-हार को अपनी जीत-हार मानते हैं। यह देश उन सबका है जो इसकी सार्वकालिक, सार्वभौमिक सार्वजनिक सांस्कृतिक परम्परा का आदर करते हैं यह देश उन सबका है जो इसकी एकता को, अखण्डता को, सत्य को, धर्म को, न्याय को, मानवता को, पारस्परिक सौहार्द को, सामाजिक, सामञ्जस्य को, समानता को, दया और उदारता को सुदृढ़ करने के लिए राजनीति का प्रयोग करते हैं। यह देश उनका नहीं है जो राजनीति का प्रयोग एक जाति को दूसरी जाति से, एक प्रदेश को दूसरे प्रदेश से, एक भाषा को दूसरी भाषा से, एक वर्ग को दूसरे वर्ग से लड़ाने के लिए करते हैं। यह देश उनका भी नहीं है जो एक वर्ग को खुश रखने के लिए दूसरे वर्ग को नीचा दिखाने के लिए संविधान में संशोधन करने की ओछी राजनीति करते हैं। यह देश उनका भी नहीं है, जिन्हें इसकी सांस्कृतिक विरासत से बदबू आती है। इस देश की और इस देश की राजनीति की सबसे बड़ी बदनसीबी यही है कि इसमें ऐसे राजनेता हैं, जिन्हें न तो देश की सांस्कृतिक परम्परा का ज्ञान है और न जिनमें राजनीतिक शालीनता है। उत्तर प्रदेश का एक कैबिनेट मन्त्री गुजरात के मुख्यमन्त्री को मुसलमानों का हत्यारा कहता है, यह व्यक्ति फिर कहता है कि कारगिल को विजय करने में मुसलमान नौजवानों का योगदान रहा है। कांग्रेस के एक राजनेता ने कहा कि यदि नरेन्द्र मोदी उत्तर प्रदेश आएगा तो उसकी बोटी-बोटी काट देंगे। इस प्रकार के बयान भारतीय राजनीति को जहां शर्मसार करते हैं वहीं सामाजिक शालीनता तथा सद्भाव को ठेस पहुंचाने का काम कर रहे हैं। आलोचना, प्रत्यालोचना तो पहले भी होती थी लेकिन उसमें राजनीतिक शालीनता होती थी, आरोप प्रत्यारोप पहले भी लगते थे राजनीतिक मर्यादा के साथ आरोप - प्रत्यारोप और आलोचना - प्रत्यालोचना का इतना घटिया दौर मैंने तो कम से कम नहीं देखा। आप ''आम आदमी पार्टी'' तो दिल्ली को लगभग 49 दिन में कोरे आश्वासनों का झुनझुना थमाकर और अपनी नाकामी को छिपाकर चल पड़े अलख जगाने केन्द्र की सत्ता हासिल करने के लिए। पहले कसम खाते हैं कि कांग्रेस-बीजेपी से न समर्थन लेंगे और न ही इन दोनों में से किसी को समर्थन देंगे लेकिन बाद में कांग्रेस से समर्थन लिया। भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ने

के आपके दावे की पोल खोलने के लिए केवल एक ही प्रसंग काफी है। हरियाणा में एक निडर, ईमानदार, आई.ए.एस. अधिकारी श्री अशोक खेमका ने राबर्ट के अनियमित भूमि सौदों को न केवल निरस्त किया, अपितु इसमें हुई अनियमितताओं की जांच के आदेश दिये लेकिन सरकार ने दूसरे जिस अधिकारी को जांच का काम सौंपा तो उन महोदय ने श्री अशोक खेमका के फैसलों को ही पलट दिया ऐसे अधिकारी श्री युद्धवीर सिंह ख्यालिया को आपने लोकसभा का टिकट देकर अपनी पार्टी का प्रत्याशी बनाया। भ्रष्टाचार पर जैसी झाड़ू इन्होंने दिल्ली में चलायी वैसी झाड़ू यदि देश में चला दी फिर तो हो गया देश का कल्याण। लगभग 67 साल इस देश की आजाद हुए हो गये लेकिन कई मामले में आजाद भारत की हालत गुलाम भारत से ज्यादा खराब है। तो सवाल उठता है कि इतने वर्षों में हमने क्या किया? जिस पार्टी ने सबसे ज्यादा इस देश पर राज किया; जिस पार्टी ने एक खानदान विशेष का नकाब पहन कर वोट मांगे, उस पार्टी ने सत्ता में रहकर क्या दिया? क्या इस देश में अब केवल तथाकथित साम्प्रदायिकत ही मुद्दा है? गरीबी, भुखमरी, निरक्षरता, बेरोजगारी, आदि बुनियादी मुद्दों को सुझाने की ओर हमारे सत्ताधीशों का कोई ध्यान नहीं। वोटर इनके सत्ता तक पहुंचने के मात्र साधन भर हैं। जैसे ही चुनाव आते हैं मुख्य मुद्दछों से मतदाताओं का ध्यान हटाकर एक व्यक्ति विशेष को लक्ष्य बनाकर, उसका एक वर्ग विशेष को भय दिखलाकर सत्ता-प्राप्ति का अपना स्वार्थ सिद्ध करने का प्रयास करते हैं। इनसे (राजनीतिक दलों से) कोई पूछे कि जैसे आप सब नरेन्द्र मोदी को सत्ता से बाहर रखने के लिए योजनाबद्ध तरीके से एकजुट हो रहे हो ऐसी गुटबन्दी, ऐसी एकता आपकी राष्ट्रीय मुद्दों को सुलझाने में, पाकिस्तान या चीन को जवाब देने में क्यों नहीं होती? इनसे कोई पूछे कि तथाकथित साम्प्रदायिकता पर तो आप सब गोलबन्द हो जाते हो लेकिन देश में व्यापत अशिक्षा, अन्याय, भुखमरी, बेरोजगारी, गरीबी जैसे ज्वलन्त मुद्दों को सुलझाने के लिए आप सबकी एकता क्यों नहीं होती? सपा क्या, बसपा क्या, कांग्रेस क्या, माकपा क्या, भाकपा क्या, आप क्या, क्षेत्रीय दल क्या इन सबका एकमात्र लक्ष्य है कि मोदी और तथाकथित साम्प्रदायिकता का जोरदार विरोध। पूर्वाग्रह से ग्रस्त होकर किसी व्यक्ति या दल विशेष पर अनर्गल आरोप लगाना इसे राजनीतिक भाषा में राजनीतिक विद्वेष कहते हैं इस सन्दर्भ में मैं किसी कवि की निम्न पंक्तियां उद्धृत करना चाहूँगा-

जिनको औरों के दामन में दाग दिखाई देते हैं।
अपने दागी दामन भी बेदाग दिखाई देते हैं।
जब शातिर के सिर पर सजता हमदर्दी का सेहरा है।
ये कूटनीति की फितरत है यह चालाकी का चेहरा है।

देश की संस्कृति, देश का सामाजिक सद्भाव, देश की सीमायें किस प्रकार सुदृढ़ हों इस प्रकार के मुद्दों से इनका कोई सरोकार नहीं हैं यदि कोई इन मुद्दों पर बात करता है तो इन तथाकथित धर्मनिरेक्षता का नकाब ओढ़े राजनीतिक दलों की नजरों में वो ही साम्प्रदायिक है। जिस देश के राजनीतिक दलों की सोच जितनी ऊँची होगी, जितनी मजबूत होगी वो देश उतना ही ऊँचा और मजबूत बनेगा। इस देश का दुर्भाग्य यही है कि इस देश के कुछ राजनीतिक दलों की सोच व्यक्ति विशेष्ज्ञ, खानदान विशेष तथा एक वर्ग विशेष तक ही सीमित है। इससे आगे सोचने की यदि किसी ने हिम्मत की तो वो हाशिए पर धकेल दिया गया या फिर उसे पार्टी बाहर का रास्ता दिखा दिया गया। इस प्रकार की सोच से व्यक्ति विशेष, खानदान, विशेष, तथा वर्ग विशेष का उत्थान तो सम्भव है, लेकिन यह विकृत सोच राष्ट्र को विनाश के कगार पर, विद्रोह के कगार पर, अराजकता के कारर पर, अशान्ति के कगार पर धकेल देगी। इसीलिए वेद का हम सबको आदेश है कि-

"मा वः स्तेन ईशत..माघशंस।"

अर्थात् हे मनुष्यों, आप पर कभी भी चोरों का, छलियों का, कपटियों का, हिंसकों का शासन न हो। अर्थात् हम कभा पापी, हिंसक, पक्षपाती, चोर और कपटी राजा का चुनाव न करें।

❑❑